Lecture No. (4)

Name of the college - A.P.S.M College, Barauni, Begusarai
L.N.M.U. Darbhanga

Name - Dr. Bharti Kumari (GT)
Deptt - A.I.H.&C
Lession/ Plan - B.A Part II (H) A.I.H.&C Paper I
Name of Topic - महाकाव्यकालीन समाज में स्त्रियों का स्थान
Date - 16-06-2021

इस काल में स्त्रियों की स्थिति में हम थोड़ा परिवर्तन देख पाते हैं। समाज में उनका मान कम हो गया था। और उसकी दशा अधिक उन्नत नहीं थी। वे भोग-विलास की सामग्री समझी जाती थी। बहु विवाह की भी प्रथा थी। उच्च कुल के लोग कई पत्नियाँ रखते थे। स्त्रीहरण और नियोग की प्रथाएँ भी थी। इन काव्यों में सती-प्रथा का भी वर्णन मिलता है। माद्री अपने पति माद्री (द्रौपदी) पाण्डु-पाँडव के साथ-साथ सती हो गई थी। स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार था। विवाह-संस्था प्रतिष्ठित थी। यद्यपि यत्र-तत्र विवाह तरह-तरह के उदाहरण भी मिलते हैं। विवाह की अनिवार्यता पर जोर दिया जाता था। रामायण के अनुसार पतिविहीना स्त्री का जीवन नेत्रविहीना वीणा तथा चक्रविहीन रथ के समान निरर्थक समझा जाता था। महाभारत में तो गृहिणी को ही गृह कहा गया है। 'महाभारत' में परस्पर मिलकर खेली जाने वाली विभिन्न क्रीड़ाओं को समाज कहा गया है।

अशोक ने अपने स्तम्भलेखों में समाज को दुर्व्यसन मानकर निंदित किया है। ऋग्वेद में समाज शब्द का

P.T.O

पर्याप्त समन मिलता है। अंतर्जातीय विवाह के भी उदाहरण मिलते हैं। भीम ने हिडिंबा राक्षसी का पर्याप्त समन (समन) मिलता है।
भीम ने हिडिंबा राक्षसी के साथ विवाह किया था और विदुर ने पारसवी कन्या के साथ 'प्रतिलोम विवाह' में ययाति और देवयानी का विवाह प्रसिद्ध है। स्वयंवर की भी प्रथा थी। सीता दमयंती, द्रौपदी इत्यादि के विवाह इसी प्रथा के अंतर्गत हुई थी। परदा-प्रथा का भी उत्थान हो रहा था। वैश्याओं का भी उल्लेख मिलता है।

भारती कुमारी
A.I.H.C.
Date 30-06-2021